

Padma Shri



PROF. KARTAR SINGH

Prof. Kartar Singh is a remarkable and exceptional author and artist known for restoration and perseverance of the traditional form of Gurmat Sangeet.

2. Born on 3rd April, 1928, in Village Ghummanke, Distt. Lahore, Prof. Kartar Singh started learning kirtan in his early age of 13 under the guidance of Giani Gurcharan Singh Ji, Bhai Sunder Singh Ji Kasoor wale, Bhai Dalip Singh Ji and later enhanced this skill while accompanying Rababi Bhai Karma (disciple of Bhai Chand). At the age of 18, he performed his first kirtan at Gurdwara Singh Sabha, Renala Khurd and Gujranwala. Then he migrated to India during the partition of 1947. He found his calling in music and spent the rest of his life devoted to music. Then under the pious direction of J.S Bhawra Ji, Pandit Balwant Rai Jiaswal Ji (disciple of Pandit Vinayakrao Patwardhan), he learned minute details about different Gayan shalies.

3. During 30 years in College teaching, Prof Singh has ignited the imagination, and instilled a love of learning music in many of his students by winning hundreds of Prizes in Shabad Gayan and music competition in various college/university level youth festivals. His students are spread across the globe, propagate his teachings and continuing the practice of Raag based Gurbani. His disciples serve kirtan sewa with Tanti Saazas (string instruments) as Ragi Jathas at Sri Darbar Sahib and other prominent Gurdwaras in India as well as abroad.

4. Prof. Singh is director of Sangeet Bharati, Ludhiana (Estb 1960), Gurmat Sangeet Academy (SGPC), Anandpur Sahib (Estb 1999), Prof. Kartar Singh Gurmat Sangeet Vidyalaya, Phagwara (Estb 2015). These institutions are working for the promotion of Bharatiya Sangeet and Gurmat Sangeet under his guidance. He is also working as Member of Kirtan Sub Committee for selection of Ragi Jathas of Golden Temple, Amritsar since 2000 and also serving as a Member of Gurmat Sangeet Faculty and Advisory Committee, Deptt. of Gurmat Sangeet Punjabi University, Patiala. He has been a nominated Member of Governing Body of Ishmeet Singh Music Institute, Ldh (run by Punjab Govt.) since 2010 and nominated as External Expert (2017-2019) on the faculty of Performing Arts of Guru Granth Sahib World Sikh University, Fatehgarh Sahib. He was also a Member of Local Audition Committee of All India Radio, Jalandhar from 1996 to 1999 and an outside Expert in Board of Control in Music, G.N.D.U., Amritsar from 2007-2009. He has served as Examiner for Panjab University, Guru Nanak Dev University, Punjabi University and Pracheen Kala Kendra, Chandigarh.

5. Being a pioneer and expert of both Gurmat Sangeet and Bhartiya Sangeet, in the span of 40 years of writing, Prof. Kartar Singh has created over 1400 novel compositions in various Raags and Mishrat Raags. He has penned down 8 Books Gurbani Sangeet Darpan; Guru Angad Dev Sangeet Darpan; Gurmat Sangeet Darpan Part-1; Part-2 and Part-3 and Guru Teg Bahadur Sangeet Darpan (English and Punjabi). These books have been published by SGPC with around 50,000 copies. As a generous human, to minimise the price of these books, he has not charged any royalty.

6. Prof. Kartar Singh's innovation in music is deep-rooted in the essence of Gurbani. He has added vilambhit khayal and introduced compositions of swai, paun and dedh beats of taals in these books which are now considered as reference books as he wrote these after researching thoroughly and studying various Raag swaroops of Shastrakaars and writers from the Medieval age like Pandit Lochan, Pandit Vithul, Sri Kanth, Pandit Somnath and many more. Prof. Singh is an expert gayak of partaal, expert recital of aparchalit Raag and aprachilit taals with various beats. With thorough research he contributed towards Bhartiya Sangeet by singing compositions in Raag Basant Bilawal thata, Raag Maru Khamaj thaata, Raag Devgandhari, Raag Asa, Raag Majh, Raag Malhar Gandhar shudh, Raag Kanra, Raag Tukhari, Raag Gauri. To save most difficult Ragas from extinction, T-Series company recorded Prof. Singhs recital in difficult Raags like Raag Gauri, Raag Gauri cheti etc. Prof. Singh has played a pivotal role in reviving the practice of Kirtan renderation in prescribed Raags with string instruments at Sri Darbar Sahib Amritsar in 2006. He is the oldest person who does kirtan inside Sri Darbar Sahib (Golden Temple) to date. He has also performed during the Commonwealth Games 2010 in New Delhi.

7. For his lifelong contribution to the revival of traditional art, Prof. Kartar Singh has been conferred with numerous national and international awards. Sangeet Natak Akademi conferred on him Tagore Ratna Award (Fellowship) in 2012 by Honorable Governor (West Bengal) and Akademi Award for the year 2008 by Honorable President of India, Srimati Pratibha Devi Singh Patil. Sikh Lifetime Achievement Award 2011 in London (U.K). Vishesh Puraskar by Sarbat Da Bhala (Welfare of Mankind), Dubai (U.A.E.). Shiromani Ragi Award by SGPC, Sri Amritsar in 2009 and by Govt. of Punjab in 2016. Gurmat Sangeet Senior Fellowship by Punjabi University, Patiala in 2011. At the age of 92 he is still as enthusiastic about music as ever. After dedicating 70 years of his life to the music, he says music is the only legacy he would like to leave behind.



प्रो. करतार सिंह

प्रो. करतार सिंह एक आसाधारण और अद्वितीय लेखक और कलाकार हैं, जिन्हें गुरमत संगीत की पारंपरिक शैली के पुनरुद्धार और संरक्षण के लिए जाना जाता है।

2. दिनांक 3 अप्रैल, 1928 को लाहौर जिले के घुमां के गांव में जन्मे प्रो. करतार सिंह ने 13 वर्ष की अल्पायु में ज्ञानी गुरबचन सिंह जी, भाई सुंदर सिंह जी कसूर वाले, भाई दलीप सिंह जी के सान्निध्य में कीर्तन सीखना शुरू किया और उसके बाद रबाबी भाई कर्मा (भाई चंद के शिष्य) की संगत में अपने संगीत कौशल को निखारा। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने गुरुद्वारा सिंह सभा, रैनाला खुर्द और गुजरांवाला में अपना पहला कीर्तन प्रस्तुत किया। उसके बाद 1947 के विभाजन के दौरान वह भारत आ गए। उन्होंने संगीत को अपना साथी बनाया और अपना शेष जीवन संगीत के प्रति समर्पित कर दिया। उसके बाद उन्होंने जे. एस. भावरा जी, पंडित बलवंत राय जियसवाल जी (पंडित विनायक राव पटवर्धन के शिष्य) की छत्रछाया में उन्होंने विभिन्न गायन शैलियों की बारीकियां सीखी।

3. महाविद्यालय में अध्यापन के 30 वर्षों के दौरान, प्रो. करतार सिंह ने शब्द गायन में सैकड़ों पुरस्कार और विभिन्न विद्यालयों/विश्वविद्यालय स्तर के युवा उत्सवों में संगीत प्रतियोगिताएं जीतकर अपने कई शिष्यों की कल्पनाओं को उड़ान दी है और संगीत सीखने की रुचि पैदा की है। उनके शिष्य दुनिया भर में फैले हुए हैं जो उनकी शिक्षाओं का प्रचार करते हैं और राग आधारित गुरबानी गाते हैं। उनके शिष्य श्री दरबार साहिब में और भारत के साथ-साथ विदेशों के अन्य प्रमुख गुरुद्वारा में रागी जत्थों के रूप में तंत्री साज के साथ कीर्तन सेवा करते हैं।

4. प्रो. करतार सिंह संगीत भारती, लुधियाना (1960 में स्थापित), गुरमत संगीत अकादमी (एसजीपीसी), आनंदपुर साहिब (1999 में स्थापित), प्रो. करतार सिंह गुरमत संगीत विद्यालय, फगवाड़ा (2015 में स्थापित) के निदेशक हैं। ये संस्थान उनके मार्गदर्शन में भारतीय संगीत और गुरमत संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए काम कर रहे हैं। वह वर्ष 2000 से स्वर्ण मंदिर, अमृतसर के रागी जत्थों के चयन के लिए कीर्तन उप समिति के सदस्य के रूप में भी काम कर रहे हैं और पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के गुरमत संगीत विभाग के गुरमत संगीत संकाय सदस्य और परामर्शदात्री समिति के सदस्य हैं। वह वर्ष 2010 से ईशमीत सिंह संगीत संस्थान, लुधियाना (पंजाब सरकार द्वारा संचालित) के शासी निकाय के नामित सदस्य हैं और गुरु ग्रंथ साहिब विश्व सिख विश्वविद्यालय, फतेहगढ़ साहिब के कला प्रदर्शन संकाय में बाहरी विशेषज्ञ (2017-2019) के रूप में नामित हैं। वह 1996 से 1999 तक आकाशवाणी, जालंधर की स्थानीय ऑडिशन समिति के सदस्य और 2007 से 2009 तक जीएनडीयू, अमृतसर के बोर्ड ऑफ कंट्रोल इन म्यूजिक के बाहरी विशेषज्ञ थे। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय और प्राचीन कला केंद्र, चंडीगढ़ में परीक्षक के रूप में कार्य किया है।

5. गुरमत संगीत और भारतीय संगीत दोनों के अग्रणी और विशेषज्ञ होने के नाते, प्रो. करतार सिंह ने 40 साल के लेखन के दौरान विभिन्न रागों और मिश्रित रागों में 1400 से अधिक नई बंदिशें तैयार की। उन्होंने गुरबानी संगीत दर्पण; गुरु अंगद देव संगीत दर्पण; गुरमत संगीत दर्पण भाग-1; भाग-2 और भाग-3 तथा गुरु तेग बहादुर संगीत दर्पण (अंग्रेजी और पंजाबी) नामक 8 पुस्तकें लिखी हैं। ये पुस्तकें एसजीपीसी द्वारा प्रकाशित की गई हैं और इनकी लगभग 50,000 प्रतियां प्रकाशित हुई हैं। उदार हृदय प्रो. करतार सिंह जी ने, इन पुस्तकों के लिए कोई रॉयल्टी नहीं ली है।

6. संगीत में प्रो. करतार सिंह के नए प्रयोग गुरबानी के मर्म में गहराई से रचे-बसे हैं। उन्होंने इन पुस्तकों में बिलम्बित खयाल शामिल किए हैं और सवाई, पौन और डेढ़ मात्रा में रचनाएं पेश की हैं। इन पुस्तकों को अब संदर्भ ग्रंथ माना जाता है क्योंकि उन्होंने पंडित लोचन, पंडित विठ्ठल, श्री कंठ, पंडित सोमनाथ और कई अन्य मध्यकालीन शास्त्रकारों और लेखकों के विभिन्न राग स्वरूप पर गहन शोध और अध्ययन करने के बाद इन्हें लिखा था। प्रो. सिंह परताल और अप्रचलित रागों और अनेक लय वाली अप्रचलित ताल के कुशल गायक हैं। पूर्ण अनुसंधान के बाद उन्होंने राग बसंत बिलावल थाट, राग मारु खमाज थाट, राग देवगांधारी, राग आसा, राग माझ, राग मल्हार गंधार शुद्ध, राग कानड़ा, राग तुखरी, राग गौरी में रचनाएं गाकर भारतीय संगीत में अपना योगदान दिया। अत्यंत कठिन रागों को विलुप्त होने से बचाने के लिए, टी-सीरीज़ कंपनी ने राग गौरी, राग गौरी चेती आदि जैसे कठिन रागों में प्रो. सिंह का गायन रिकॉर्ड किया। उन्होंने 2006 में श्री दरबार साहिब अमृतसर में तंत्री वाद्य के साथ निर्धारित रागों में कीर्तन गाकर इस परम्परा को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के समय में श्री दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर) में कीर्तन करने वाले वे सबसे बुजुर्ग व्यक्ति हैं। उन्होंने नई दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेल 2010 के दौरान भी प्रस्तुति दी थी।

7. पारंपरिक कला के पुनरुत्थान में आजीवन योगदान के लिए, प्रो. करतार सिंह को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें 2012 में माननीय राज्यपाल, पश्चिम बंगाल के हाथों टैगोर रत्न पुरस्कार (फेलोशिप) और भारत के तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील द्वारा वर्ष 2008 का अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया और 2011 में उन्हें लंदन, यूनाइटेड किंगडम में सिख लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। सर्वत दा भला (मानव कल्याण), दुबई, संयुक्त अरब अमीरात द्वारा विशेष पुरस्कार, एसजीपीसी अमृतसर द्वारा 2009 में और पंजाब सरकार द्वारा 2016 में शिरोमणि रागी पुरस्कार, 2011 में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा गुरमत संगीत सीनियर फेलोशिप प्रदान की गई है। 92 वर्ष की उम्र में वह पहले की तरह संगीत के प्रति उत्साही रहते हैं। अपने जीवन के 70 वर्ष संगीत को समर्पित करने के बाद, उनकी अभिलाषा भावी पीढ़ी को अपनी संगीत विरासत सौंपना है।